# पंजाब में शास्त्रीय संगीत के गायन के घराने और उनके प्रमुख संगीतकार

**डॉ. जितेन्द्र कौर**
संगीत गायन विभाग, खालसा कॉलेज फॉर वूमेन, अमृतसर

---

कला के क्षेत्र में उद्देश्य एक होते हुए भी अभिव्यक्ति की नित्य नयी शैलियां आस्तित्व में आती रहती है जो पुरानी शैलियों को चुनौती देती रहती हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में राग–स्वर और लय–ताल की समानता होते हुए भी संगीत को सजाने संवारने की शैलीगत विशेषताएँ निसर्ग प्रदत्त गुण धर्म अर्थात् कंठ की क्षमता स्वर के उच्चारण की रीति, बुद्धि के समुचित प्रयोग एवं मन की प्रवृत्ति के कारण परस्पर अन्तर स्थापित करती हैं। किसी शैली विशेष के प्रणेता कलाकार और उसके क्रियाशील शिष्यों अथवा अनुयायियों की कलागत प्रतिभा एवं जनसाधारण में उसके समर्थन एवं लोकप्रियता के आधार पर एक घराना विशेष अस्तित्व ग्रहण करता है। शास्त्रीय संगीत से प्रेम करने वाले विचारशील श्रोता इस नवीन शैली के गुणों को परखने हैं, उससे प्रभावित होते हैं, उसके प्रशंसक बनकर उसे प्रोत्साहित करते हैं और इस प्रकार वह घराना समाज में मान्यता प्राप्त करता है।

पंजाब में कई घराने अस्तित्व में आए प्रसिद्धि प्राप्त की अवनति के दिन देखे और आखिर विलीन हो गए। कभी एक घराने का कलाकार अनेक घरानों के उस्तादों से सीखकर एक नवीन गायकी को विकसित करते हुए एक स्वतन्त्र घराने की नींव रखता है। (इस तथ्य के उदाहरण स्वरूप पटियाला घराने को प्रस्तुत कर सकते हैं) और कभी एक विशेष घराना अत्यधिक ख्याति अर्जित करने के पश्चात् वंशधरों के अभाव में अथवा वंशधरों और शिष्यों के अन्य घराने का शिष्यत्व ग्रहण कर लेने से विघटित हो जाता है। इस तथ्य के सम्बन्ध के पंजाब के सुप्रसिद्ध कसूर घराने का उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है जिसका सूर्य अस्त हो चुका है क्योंकि उसके प्रतिभावान एवं इस युग के महान् गायक उस्ताद बड़े गुलाम अली खां ने पटियाला घराने का शिष्यत्व ग्रहण कर लिया और कसूर घराने का विलयन पटियाला घराने में हो गया। वरना बड़े गुलाम अली खां के असाधारण व्यक्तित्व के कारण कसूर घराना आज भी अस्तित्व में बना रहता। उनके सुपुत्र उस्ताद मुनव्वर अली खां आज कसूरिया न कहे जाकर पटियाला घराने के कलाकार कहे जाते हैं। कसूर घराने में ऐसा कोई भी कलाकार शेष नहीं बचा है जिसकी प्रतिभा के बल पर घराने का नाम जीवित रहता।

यहां यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि पंजाबी अंचल में अद्भुत छः घरानों में से तीन घराने अपने सम्बन्ध स्वामी हरिदास के शिष्य सूरज खां और चांद खां (दिवाकर पंडित और सुधाकर पंडित) से जोड़ते हुए इन्हें ही अपना मूल पुरुष घोषित करते हैं। शताब्दियों प्राचीन होने से ये सभी घराने मूलतः ध्रुवपद गायकों के घराने में कुछ घराने विघटित हो गए हैं और विद्यमान घरानों के वंशधरों ने युग की मांग के अनुसार ख्याल गायकी को अपनाकर ध्रुवपद को प्रायः तिलांजलि दे दी है।

## तलवंडी घराना

तलवंडी घराना पंजाब के ध्रुवपद गायकों का प्राचीनतम घराना था। इस घराने के वंशधारी अथवा शिष्य परम्परा के कलाकार सुविख्यात सूरज खां और चांद खां को अपना मूल पुरुष मानते हैं और इस प्रकार इसका संस्थान अकबर के शासन काल से अनुस्यूत करते है। सूरज खां और चांद खां सुप्रसिद्ध भक्त गायक स्वामी हरिदास के शिष्य थे। अपने गुरू स्वामी हरिदास से संगीत शिक्षा प्राप्त कर ये दोनों कलाकार पंजाब लौट आए। इनके पंजाबी होने में संदेह के लिए स्थान नहीं हैं क्योंकि गुरू के यहां से शिक्षा प्राप्तकर शिष्य पहले स्वदेश को ही प्रत्यागमन करता है। एक लेखक ने निश्चयात्मक रूप में इनके निवास स्थान का नाम खैराबाद ग्राम बताया है जो तत्कालीन पंजाब प्राप्त में स्थिति था।[1] 'नाद विनोद' नामक ग्रन्थ में स्वामी हरिदास के इन शिष्यों के नाम दिवाकर और सुधाकर पंडित थे परन्तु बाद में इस्लाम धर्म में परिवर्तित होने के कारण इनके नाम चांद खां और सूरज खां हो गए। इन्हीं के समय में तन्ना मिश्र भी तानसेन हो गए थे।

इस घराने के कलाकारों ने पूरे पंजाब पर अपनी कला की छाप डाल दी। अनेक स्थानों पर निवास करने पर भी ये कलाकार तलवंडी घराना के ही कहे गए और घराने की ख्याति एवं लोकप्रियता को दृष्टि मे रखते हुए ऐसा कहे जाने में इन्होंने गर्व का अनुभव किया। इस घराने में केवल उत्कृष्ट ध्रुवपद गायक ही नहीं हुए अपितु उत्कृष्ट कीर्तनकार भी उत्पन्न हुए। लगभग साढ़े चार सौ वर्षो की अवधि में अनेक श्रेष्ठ गायको ने इस घराने का नाम उजागर किया होगा। लेकिन अभिलेखों के आभाव में उनके नाम विस्मृति के गर्भ में विलीन हो चुके हैं।

आज हम केवल इतना कह सकते हैं कि तलवंडी घराना पंजाब के ध्रुवपद गायकों का एक सुविख्यात घराना था जिसने भारतीय संस्कृति के पोषण में बहुत योगदान दिया।

तलवंडी घराने के गायक कुछ तो ऐसे थे जो वंश परम्परा के गायक कलाकार थे कुछ शिष्य परम्परा के गायक कलाकार थे और कुछ गुरूवाणी कीर्तन के कलाकार थे। इन सब कोटियों में उत्कृष्ट ध्रुवपद गायक उत्पन्न हुए। यह कहना चाहिए इन कलाकारों की वजह से हमारी शास्त्रीय संगीत की सबसे प्राचीन विधा ध्रुवपद आज भी हमारे बीच जीवित है। भले ही यह विधा कठिन होने के कारण आधुनिक समय में ज्यादा प्रचलित नहीं है परन्तु तलवंडी घराने में ध्रुवपद गायक ही थे जिन्होंने पंजाब में संगीत के शास्त्रीय रूप को संभाले रखा।

इस घराने से सम्बन्धित कतिपय कलाकारों के नाम छज्जू खां, मौला बख्श, मौला दाद खां, बुग्गर खां, मुबारक अली खां, भीखे खां, मेहद अली रस राग खां, हुसैन खां, बूटे खां, महाराय गंगा सिंह आर्य, खां वैष्बवदास, भाई चांद, भाई उत्तम सिंह, भाई लाल, भाई मोती, भाई गुरमुख सिंह, भाई सुन्दर सिंह, पं. दलीप चन्द्रबेदी आदि के नाम उल्लेखनीय है।[2] तलवण्डी घराने के शिष्य मुहम्मद बख्श और अहमद बख्श प्रसिद्ध ध्रुवपदिए थे और युगल बन्दी में गाया करते थे।[3]

## शाम चौरासी घराना

इस घराने का नाम पूर्वी पंजाब के होशियारपुर जिले में स्थित शाम चौरासी नामक स्थान पर आधारित है लेकिन भ्रमवश प्रायः लोग इस घराने को श्याम चौरासी संज्ञा प्रदान करते है। घरानों के नाम विशेषकर उनके मूलपुरुष के जन्म स्थान या कार्यस्थल के नाम के आधार पर रखे जाते हैं। शाम चौरासी घराने का सम्बन्ध भी तलवंडी घराने के समान ही सोहलवीं शताब्दी के सूरज खां और चांद खां से जोड़ते है।[4] हो सकता है कि इन मूल पुरुषों से शिक्षा अर्जित करके इनके शिष्यों ने अपनी विशेष प्रतिभा के बल पर एक अन्य घराने को भी अस्तित्व प्रदान किया लेकिन मूल पुरुष की गरिमा और महात्म्य से अभिभूत होने के कारण उनके नाम से सम्बन्ध विच्छेद न कर सके और अपने द्वारा अस्तित्व में लाए हुए घराने की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए उन महान कलाकारों को ही अपना मूलपुरुष मानते हैं।

आज भारतवर्ष में शामचौरासी घराने का नाम प्रायलुप्त है। क्योंकि कतिपय कलाकारों के विद्यमान होते हुए भी उत्कृष्ट प्रतिभाशाली कलाकारों के अभाव में इस घराने की ख्यति विलीन हो चुकी है। भारतीय क्षेत्र में उपजने के और विकसित होने पर भी आज इस घराने के मूर्धन्य कलाकार उस्ताद सलामत अली खां उनके परिवार के अन्य संगीतज्ञ एंव शिष्य परम्परा के कलाकार पाकिस्तान में उपस्थित है और पाकिस्तान ही नहीं अपितु देश विदेशों में कीर्ति अर्जित करते हुए इस घराने का नाम उजागर कर रहे है। सन्तोष का विषय यह है कि उनकी राष्ट्रीयता पाकिस्तानी होते हुए भी वे अपने को शाम चौरासी से सम्बन्धित होने से गर्व का अनुभव करते हैं। यह घराना मुगल शासनकाल में भी अपनी प्रतिभा सम्पन्नता के कारण अत्यन्त सुविख्यात था और एक किंवदन्ती के अनुसार प्रसिद्ध संगीत प्रेमी मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीले भी यहां के कलाकारों का संगीत सुनने के निमित्त इस अंचल में आया था।[5]

इसी घराने के साई करीम बख्श उच्च कोटि के ध्रुवपद गायक थे। मात्र गायन में ही नही वादन कला में भी इस घराने के कलाकारों ने अच्छी प्रसिद्ध प्राप्त की थी। इस घराने के कलाकारों ने बैजूबावरा से भी संगीत शिक्षा ग्रहण की। एक बार जब बैजूबावरा कश्मीर से वापिस आते हुए होशियारपुर के निकट बिजवाडा गांव मे ठहरे तो कुछ कलाकारों से इनकी शिष्य परम्परा विकसित हुई कहा जाता है कि बैजू के नाम से ही बिजवाड़ा ग्राम का नाम पड़ा।[6]

विलायत अली के सुपुत्र नजाकत अली और सलामत अली ने इस घराने का नाम विश्वभर में उजागर किया। इन दोनो भाइयों को प्रारम्भिक शिक्षा ध्रुवपद गायन की मिली। लेकिन ख्याल गायन की लोकप्रियता को देखते हुए इनके पिता ने इन दोनों को ख्याल गायकी की भी पूर्ण शिक्षा दी। सलामत अली के अनुसार भारतीयसंगीत का मौलिक तत्व ध्रुवपद गायन ही है। वही सब शैलियों में प्राचीनतम और महत्वपूर्ण है। ध्रुवपद गायन के सम्यक ज्ञान के अभाव में गायक कलाकर उन्नति नहीं कर सकता।[7]

इसके अलावा मास्टर रतन और उनके शिष्य पुरुषोतम दास जलोटा एवं उनके पुत्र अनूप जलोटा विशेष उल्लेखनीय है। ओम प्रकाश मोहन आदि भी इसी घराने से सम्बन्धित है।

## कपूरथला घराना

अकबर युग के सुप्रसिद्ध ध्रुवपद गायक चांद खां और सूरज खां का व्यक्तित्व कला नैपुण्य के कारण पंजाब पर इतना छा चुका था कि मात्र तलवंडी घराना और शाम चौरासी घराना ही इन्हे अपना मुलपुरुष नहीं मानते अपितु कपूरथला घराने का गायक भी इन संगीतज्ञो को ही अपना मूलपुरुष स्वीकार करते है। इन दोनों कलाकारों के पश्चात् इस घराने के प्रथम प्रतिभाशाली गायक के रूप में साई इलियास का नाम लिया जाता है और एक प्रकार से इन्हें ही इस घराने का मुलपुरुष माना जाता है। वस्तुत आपने तलवंडी घराने के किसी उस्ताद से संगीत शिक्षा प्राप्त की थी लेकिन कपूरथला निवासी होने के कारण एवं कपूरथले में संगीत केन्द्र स्थापित करने के कारण आपको कपूरथला घराने के संस्थापक होने की प्रतिष्ठा प्रदान की जाती है। पं॰ अमीचन्द सुलतानपुरिये और पं॰ नत्थू रामासुल्तानपुरिये इनके सुप्रसिद्ध शिष्यों में से थे।

कपूरथला घराने के अधिकतर गायक मुगल शासकों से दरबारी गायक नियुक्त हुए प्राय सभी शास्त्रीय गायन में निपुण थे। पं॰ अमीचन्द लयकारी में सिद्धहस्त थे और अत्यन्त कठिन तालों में ध्रुवपद गायन करते थे। अमीचन्द न केवल ध्रुवपद गायन करते थे बल्कि गायक होने के साथ–साथ उत्कृष्ट नायक भी थे। आपने अनेक लोकप्रिय श्लोक दिए ध्रुवपदों की रचना की पं. नत्थू राम कपूरथला के ध्रुवपद कलाकारों में से थे। आपके परिवार में भगवान की स्तुति वन्दना भी ध्रुवपदों के गायक द्वारा की जाती थी। सर्वप्रथम पं॰ नत्थू राम ने पुरानी शब्द शीतों पर आधारित ध्रुवपदों को सिखाने पर जोर दिया। जिन रागों का नाम गुरू साहिब ने उन ध्रुवपदों पर अंकित किया है। उन्हीं रागों में अनिवार्यतः उन शब्दों के गायन की शिक्षा देना अपना पुनीत कर्तव्य समझते रहे। इन्होंने विद्यार्थियों को रात्री समय गाई जाने वाली कान्हडे दी वार गाने का शिक्षण दिया।[8] इसके अलावा मीर रहमत अली भाई बूआ भगवान दास सैनी महन्त गज्जा सिंह कुंवर मृगेन्द्र सिंह विशेष उल्लेखनीय है।

भाई बूआ ये ना केवल संगीत के क्रियात्मक वरन् शास्त्रीय पक्ष का पूर्ण ज्ञान रखते थे। इनके पास ध्रुवपदों तथा सादरों (झपताल की रचना) का विशाल भंडार था। इन्हें अनगिनत रागों का अति गम्भीर ज्ञान था। शास्त्रीय गायक वादकों तथा गुरू ग्रन्थ साहब के कीर्तनकारों के शिरमौर थे और ज्ञान के असीम भंडार थे। भाई बूआ जीवन पर्यन्त हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत तथा सिख भक्ति संगीत की सेवा में लगे रहे।

## हरियाणा घराना

पंजाब का हरियाणा घराना स्वामी हरिदास के शिष्यों द्वारा स्थापित घराना माना जाता है। इस महान संगीतज्ञ के नाम से अनुस्यूत होने के कारण इस घराने की परम्परा अत्यन्त प्राचीन होनी चाहिए लेनिक इससे संबंधित प्राचीन इतिहास के विलुप्त हो जाने के कारण निश्चयात्मक रूप में कुछ भी कहना कठिन है। ऐतिहासिक तथ्यों के अभाव में इस घराने के मूलपुरुष के रूप में छज्जू भगत का नाम आता है। आप बड़े उच्चकोटि के ध्रुवपद गायक थे आपके शिष्य गुज्जर राम वासदेव रागी (गुज्जर भगत) ने ध्रुवपद गायन में अत्यधिक कीर्ति अर्जित की। हरयाणा घराना को ख्याति के शिखर पर पहुचने का श्रेय आप को ही है। आप पंजाब के ही नहीं अपितु सारे देश के महान् संगीतज्ञ है।[9]

इसके इलावा स्वर्गीय मुहम्मद हुसैन, श्री हिदायत हुसैन, खुदाबख्श और अहमद बख्श ने ध्रुवपद गायन में विशेष ख्याति अर्जित की। मुहम्मद हुसैन मात्र गायक ही नहीं अपितु उच्च कोटि के नायक भी थे। इनकी रचनाओं की भाषा अत्यन्त सरल होती थी और उनमें भावों की सुन्दरता भी पाई जाती थी।[10]

## कसूर घराना

कसूर घराना का इतिहास डेढ़ शताब्दियों की अवधि के मध्य फैला हुआ है। इसका प्रादुर्भाव उन्नसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुआ और बीसवी शताब्दी के मध्य तक इसके सौभाग्य का सूर्यास्त हो गया क्योंकि इसकी गायन परम्परा को जीवित रखने वाले कलाकार पटियाला घराने के प्रति निष्ठावान हो गए।

इस घराने के जन्मदाता के रूप में ईर्शाद अली खां का नाम लिया जाता है। जो कसूर निवासी थे और महाराजा रणजीत सिंह के दरबारी गायक थे। कसूर निवासी होनें के कारण ही इनके वंशज कसूरिये कहलाए।[11] कसूर नामक स्थान भारत विभाजन के पश्चात् पाकिस्तान की क्षेत्र सीमा के अर्न्तगत आ गया और इस प्रकार अब भारत से इसका कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है। लेकिन जब घराने की नींव पड़ी थी तब यह अविभाजित भारत का ही एक भाग था। इस घराने के मूल पुरुष ईर्शाद अली खां की गिनती उस मसय के उत्कृष्ट गायकों में होती थी। इनके पुत्र मुहम्मद ईदा खां पटियाला के दरबारी गायक हुए। इनके दो पुत्र काले खां और अली वख्श हुए। पिता की मृत्यु के बाद दोनों बालक पटियाला घराने के सुविख्यात कलाकार फतेह अली खां का शिष्य हो गए और उनसे संगीत का सम्यक ज्ञान प्राप्त किया। इस प्रकार फतेह अली खां के शिष्यत्व गृहण करने के कारण कसूर घराने का विलयन पटियाला घराने में हो गया।[12]

कसूर घराने से सम्बन्धित उस्ताद झण्डे खां शास्त्रीय संगीत के साथ–साथ सुगम संगीत में भी सिद्धहस्त कलाकार थे।[13] अगर ईच्छा खां की मृत्यु ना हुई हाती तो कसूर घराना शायद जिन्दा रहता।

## पटियाला घराना

संगीत के दृष्टिकोण से देखा जाए तो इस कला के उन्नायकों में शीर्षस्थान पर महाराजा कर्म सिंह का ही नाम आता है। जिन्होंने संगीत के विकास में विशेष योगदान दिया। महाराजा नरेन्द्र सिंह राजेन्द्र सिंह भूपेन्द्र ने भी अपने–अपने शासनकाल में सुप्रसिद्ध संगीतकारों को दरबारी संगीतज्ञ के रूप में सेवा करने का अवसर प्रदान किया। इन दरबारी कलाकारों में सारंगी वादक मियां कालू खां मियां दित्ते खां मियां अली बख्श फतेह अली खां अख्तर हुसनै खां अमानत अली खां फतेह अली खां, मियां जान खां, मियां अहमद खान उस्ताद बाकर हुसैन आदि के नाम उल्लेखनीय है।[14]

पटियाला घराने से स्थापक के रूप में अलिया फत्तू को ही मान्यता प्रदान की जाती है।[15] यद्यपि इस घराने की नींव मियां कालू खां ने महाराणा राजेन्द्र सिंह के राज्यकाल में ही डाल दी थी। तथापि मान्यता एवं ख्याति इसे अलियाफत्तू द्वारा ही प्राप्त हुई मियां कालू खां ने अपने समय के सुप्रसिद्ध संगीताकरों से ख्याल गायन की शिक्षा प्राप्त की और अपने पुत्र अली वाव्श तथा उसके घनिष्ट मित्र फतेह अली को ख्याल गायन की शिक्षा दी कालान्तर में इन दोनों कलाकारों ने मियां

कालू खां के अतिरिक्त अन्य प्रसिद्ध उस्तादों से भी संगीत की शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने अनेक घरानों की शैलियों की खूबियों को संकलित करके एक नवीन शैली बनाई और आगे चलकर इसी गायकी से पटियाला घराने का अस्तित्व प्रकाश में आया। पंजाब के ख्याल गायकी का सम्यक् प्रचार इसी घराने द्वारा हुआ।

अभी तक जो घराने आए वह सभी ध्रुवपद गायको के थे परन्तु पटियाला घराने के पंजाब में ख्याल गायकी का सम्यक प्रचार किया। हमारे सभी शासक संगीत प्रेमी हुए उन्होंने अच्छे–अच्छे कलाकारों को प्रोत्साहन दिया। अपने दरबार में नौकरियां दी पुरस्कार देकर हौसला बढ़ाया जिससे संगीत प्रेमीयों में संगीत को सुनने और सीखने का बराबर मौका मिला। सभी घराने–शास्त्रीय संगीत के घ्रवुपद कलाकारों के थे। सभी ने समय की मांग के अनुसार ठुमरी, टप्पा धमार गज़ल गीत शब्द ख्याल आदि का प्रचार प्रसार किया। यहाँ तक कि आधुनिक काल में सिख भक्ति संगीत के बड़े–बड़े गायक कलाकार कहीं ना कहीं इन्हीं घरानों से सम्बन्धित थे। कुछ वंश परम्परा के अर्न्तगत कुछ शिष्य परम्परा के अन्तर्गत। जिस कारण सिख भक्ति संगीत जिसकी नींव शास्त्रीय संगीत ही है, शुद्ध रागों में किया जाता है।

## संदर्भिका


1. हमारे संगीत रत्न, लक्ष्मी नारायण गर्ग, पृ. 192.
2. पंजाब की संगीत परम्परा, डॉ. गीता पेन्टल, पृ. 124–125.
3. भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास, डॉ. जोगिन्द्र सिंह बावरा, पृ. 139.
4. वही
5. प्रीत लड़ी, अप्रैल 1980, पृ. 44.
6. पंजाब की संगीत परम्परा, डॉ. गीता पेन्टल, पृ. 134.
7. संगीत कला विहार, अक्टूबर 1960, पृ. 329.
8. गुरु नानक संगीतज्ञ, डॉ. डी.एस. नरूला, पृ. 150.
9. हमारे संगीत रत्न, लक्ष्मी नारायण गर्ग, पृ. 176.
10. पंजाब की संगीत परम्परा, डॉ. गीता पेन्टल, पृ. 143.
11. वही, पृ. 144.
12. भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास, डॉ. जोगिन्द्र सिंह बावरा, पृ. 170.
13. मौसिकीए हिन्द, लेखक अज्ञात, पृ. 74–75.
14. भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास, डॉ. जोगिन्द्र सिंह बावरा, पृ. 146.
15. वही, पृ. 145.